

खटमल और बेचारी जूं

एक राजा के शयनकक्ष में मंदरीसर्पिणी नाम की जूं ने डेरा डाल रखा था। रोज रात को जब राजा जाता तो वह चुपके से बाहर निकलती और राजा का खून चूसकर फिर अपने स्थान पर जा छिपती।

संयोग से एक दिन अग्निमुख नाम का एक खटमल भी राजा के शयनकक्ष में आ पहुंचा। जूं ने जब उसे देखा तो वहां से चले जाने को कहा। उसने अपने अधिकार-क्षेत्र में किसी अन्य का दखल सहन नहीं था।

लेकिन खटमल भी कम चतुर न था, बोलो, “देखो, मेहमान से इसी तरह बर्ताव नहीं किया जाता, मैं आज रात तुम्हारा मेहमान हूं।” जूं अततः खटमल की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गई और उसे शरण देते हुए बोली, “ठीक है, तुम यहां रातभर रुक सकते हो, लेकिन राजा को काटोगे तो नहीं उसका खून चूसने के लिए।”

खटमल बोला, “लेकिन मैं तुम्हारा मेहमान हूँ, मुझे कुछ तो दोगी खाने के लिए। और राजा के खून से बढ़िया भोजन और क्या हो सकता है।”

“ठीक है।” जूं बोली, “तुम चुपचाप राजा का खून चूस लेना, उसे पीड़ा का आभास नहीं होना चाहिए।”

“जैसा तुम कहोगी, बिलकुल वैसा ही होगा।” कहकर खटमल शयनकक्ष में राजा के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

रात ढलने पर राजा वहां आया और बिस्तर पर पड़कर सो गया। उसे देख खटमल सबकुछ भूलकर राजा को काटने लगा, खून चूसने के लिए। ऐसा स्वादिष्ट खून उसने पहली बार चखा था, इसलिए वह राजा को जोर-जोर से काटकर उसका खून

चूसने लगा। इससे राजा के शरीर में तेज खुजली होने लगी और उसकी नींद उचट गई। उसने क्रोध में भरकर अपने सेवकों से खटमल को ढूंढकर मारने को कहा।

यह सुनकर चतुर खटमल तो पंलग के पाए के नीचे छिप गया लेकिन चादर के कोने पर बैठी जूं राजा के सेवकों की नजर में आ गई। उन्होंने उसे पकड़ा और मार डाला।

सीख : हमें अजनबियों की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर उनपर भरोसा नहीं करना चाहिए अपितु उनसे सावधान ही रहना चाहिए।

एएभल और मेरारी सुं

एक रात के मयनकब में भंडारीभण्डारी नाम की सुं ने रोग चल गया था। रोग रात के एक रात रात उठे वरु सुपके में गहर निकलती और रात का पुन प्रभकर फिर सुपने भूत पर र लिपटी।

मंथेग में एक दिन सुपिभाप नाम का एक एएभल ही रात के मयनकब में सु पड़ता सुं ने एक उमें टोपा उठे वरु में गले रने के करु। उमने सुपने सुपिकार-बुं में किभी सुनु का टापल भरन नहीं था।

लेकिन एएभल ही कम टपुन न था, गेले, “टोपे, मेरुभान में अभी उरु गुरुव नहीं किया रात, मैं सुए रात उभरु मेरुभान रुं” सुं सुतुः एएभल की गिकनी-पुपड़ी गउं में सु गरं और उमें मरुं टुं रुा गेली, “ठीक है, तुम वरुं रातु रुक मकउं है, लेकिन रात के काएगे उें नहीं उमका पुन प्रभने के लिए।” एएभल गेला, “लेकिन मैं उभरु मेरुभान है, भुं कुक उें देगी पुने के लिए। और रात के पुन में गदिया हेएन और रु के मकउं है।”

“ठीक है” सुं गेली, “तुम सुपुप रात का पुन प्रभ लेन, उमें पीरु का सुरुभ नहीं देन टाकिए।”

“सुं तुम कहेगी, गिलकुल वैभा की देगा।” करुकर एएभल मयनकब में रात के सुने की पुडीन करने लगा।

रात चलने पर रात वरुं सुषा और गिभुर पर पडकर में गया। उमें टोप एएभल मरुकु हलकर रात के काएने लगा, पुन प्रभने के लिए। टोपा सुदिए पुन उमने पकली मर टोपा था, उभलिया वरु रात के सुं-सुं में काएकर उमका पुन प्रभने लगा। उममें रात के मरीर में उंए पुएली देने लगी और उमकी नींद उठए गरं। उमने कूण में रुकर सुपने मेवके में एएभल के सुंकर भरणे के करु।

वरु भुनकर टपुन एएभल उें पंग के पाए के नींद लिप गया लेकिन टाकर के केने पर गेरी सुं रात के मेवके की नएन में सु गरं। उनें उमें पकडा और भरणे चला।

भीपः रुमें सुएनगिधें की गिकनी-पुपड़ी गउं में सुकर उनपर रुंभा नहीं करन टाकिए सुपिउ उमें भावणन की ररुन टाकिए।

सुनुवद - पूरु सुं